eISSN 3049-2610
Research Stream
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 03, Issue 01, March 2026

जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति और भारतः जलवायु न्याय, विकास और अंतरराष्ट्रीय दायित्वों का अध्ययन

डा0 अरविन्द कुमार शुक्ल[1]
[1]एसोसिएट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय बिंदकी, फतेहपुर उ0प्र0, भारत

Received: 20 March 2026 Accepted & Reviewed: 25 March 2026, Published: 31 March 2026

Abstract

जलवायु परिवर्तन इक्कीसवीं सदी की सबसे गंभीर वैश्विक चुनौतियों में से एक है, जिसने केवल पर्यावरणीय संकट के रूप में ही नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय राजनीति, वैश्विक शासन, आर्थिक विकास, ऊर्जा नीति और न्याय के प्रश्नों के रूप में भी व्यापक महत्व प्राप्त किया है। वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन की समस्या ने विश्व राजनीति को नए सिरे से परिभाषित किया है, जहाँ विकसित और विकासशील देशों के बीच उत्तरदायित्व, संसाधन–वितरण, तकनीकी हस्तांतरण, जलवायु वित्त तथा उत्सर्जन–नियंत्रण को लेकर निरंतर बहस और संघर्ष देखने को मिलता है। इस संदर्भ में जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति केवल पर्यावरणीय सरोकारों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह शक्ति–संतुलन, वैश्विक असमानता, विकास के अधिकार और अंतरराष्ट्रीय दायित्वों से भी गहराई से जुड़ी हुई है। भारत, एक उभरती हुई अर्थव्यवस्था और वैश्विक दक्षिण के प्रमुख प्रतिनिधि के रूप में, जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक ओर भारत विकास, ऊर्जा सुरक्षा, औद्योगिकीकरण, गरीबी उन्मूलन और सामाजिक न्याय की आवश्यकताओं से जुड़ा हुआ है, वहीं दूसरी ओर वह जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों, जैसे तापमान वृद्धि, अनियमित मानसून, जल–संकट, कृषि संकट, जैव–विविधता ह्रास और प्राकृतिक आपदाओं से भी गंभीर रूप से प्रभावित है। इसलिए भारत की जलवायु नीति एक जटिल संतुलन का उदाहरण प्रस्तुत करती है, जिसमें पर्यावरणीय उत्तरदायित्व, राष्ट्रीय विकास–हित, ऊर्जा संक्रमण और अंतरराष्ट्रीय कूटनीति सभी एक साथ उपस्थित हैं। प्रस्तुत अध्ययन "जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति और भारत" विषय के अंतर्गत इस बात का विश्लेषण करता है कि जलवायु परिवर्तन किस प्रकार वैश्विक राजनीतिक विमर्श का केंद्रीय प्रश्न बन चुका है और भारत इस विमर्श में किस प्रकार अपनी भूमिका, स्थिति और नीति–दृष्टि का निर्माण कर रहा है। अध्ययन में जलवायु शासन की प्रमुख संधियोंकृजैसे संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन रूपरेखा अभिसमय (UNFCCC), क्योटो प्रोटोकॉल और पेरिस समझौताकृके संदर्भ में भारत की भूमिका का परीक्षण किया जाएगा। साथ ही जलवायु न्याय, "समान किंतु विभेदित उत्तरदायित्व" जलवायु वित्त, तकनीकी हस्तांतरण, नवीकरणीय ऊर्जा, नेट–ज़ीरो लक्ष्यों तथा सतत विकास के संदर्भ में भारत की नीति और कूटनीतिक दृष्टिकोण का विश्लेषण किया जाएगा। यह शोध मुख्यतः गुणात्मक पद्धति पर आधारित है, जिसमें पुस्तकों, शोध–पत्रों, अंतरराष्ट्रीय रिपोर्टों, नीति–दस्तावेजों, सरकारी प्रकाशनों और बहुपक्षीय समझौतों का विश्लेषण किया जाएगा। अध्ययन का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति में भारत केवल एक प्रभावित देश नहीं, बल्कि एक सक्रिय, उत्तरदायी और संतुलनकारी शक्ति के रूप में उभर रहा है। निष्कर्षतः यह शोध दर्शाएगा कि भारत की जलवायु नीति विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती है तथा वह वैश्विक दक्षिण के हितों, जलवायु न्याय और सतत विकास के पक्ष में एक महत्वपूर्ण कूटनीतिक भूमिका निभा रहा है।

eISSN 3049-2610
Research Stream
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 03, Issue 01, March 2026

मुख्य शब्द– जलवायु परिवर्तन, वैश्विक राजनीति, भारत, जलवायु न्याय, पर्यावरणीय कूटनीति, पेरिस समझौता, वैश्विक जलवायु शासन, सतत विकास, कार्बन उत्सर्जन, वैश्विक दक्षिण.

Introduction

जलवायु परिवर्तन वर्तमान युग की सबसे गंभीर, व्यापक और जटिल वैश्विक समस्याओं में से एक है। यह केवल तापमान वृद्धि या पर्यावरणीय असंतुलन तक सीमित प्रश्न नहीं है, बल्कि मानव जीवन, आर्थिक विकास, खाद्य सुरक्षा, जल संसाधन, ऊर्जा, स्वास्थ्य, जैव–विविधता, आपदा प्रबंधन और अंतरराष्ट्रीय राजनीति से गहराई से जुड़ा हुआ मुद्दा है। इक्कीसवीं सदी में जलवायु परिवर्तन ने विश्व राजनीति के स्वरूप को नए ढंग से प्रभावित किया है और इसे अंतरराष्ट्रीय संबंधों के एक केंद्रीय विमर्श के रूप में स्थापित कर दिया है। आज जलवायु परिवर्तन पर होने वाली बहसें केवल वैज्ञानिक तथ्यों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे उत्तरदायित्व, न्याय, संसाधनों के वितरण, तकनीकी हस्तांतरण, जलवायु वित्त, विकास के अधिकार और वैश्विक शक्ति–संतुलन जैसे प्रश्नों से भी संबंधित हैं। यही कारण है कि जलवायु परिवर्तन की समस्या को समझना अब केवल पर्यावरण अध्ययन का विषय नहीं रह गया है, बल्कि यह वैश्विक राजनीति और कूटनीति का भी अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र बन चुका है।

समकालीन विश्व व्यवस्था में जलवायु परिवर्तन की राजनीति का केंद्र विकसित और विकासशील देशों के बीच उत्तरदायित्व के विभाजन पर टिका हुआ है। विकसित देशों ने औद्योगिक क्रांति के बाद से बड़े पैमाने पर कार्बन उत्सर्जन कर वैश्विक तापवृद्धि में प्रमुख योगदान दिया है, जबकि विकासशील देश अपेक्षाकृत कम ऐतिहासिक उत्सर्जन के बावजूद जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों का अधिक सामना कर रहे हैं। इस असमानता ने जलवायु न्याय की अवधारणा को जन्म दिया, जिसके अंतर्गत यह तर्क प्रस्तुत किया गया कि जलवायु संकट का समाधान समान दायित्व के सिद्धांत पर नहीं, बल्कि न्यायपूर्ण और विभेदित उत्तरदायित्व के आधार पर होना चाहिए। इसी संदर्भ में "ब्वउउवद इनज क्पमितमदजपंजमक त्मेचवदेपइपसपजपमे" का सिद्धांत अंतरराष्ट्रीय जलवायु राजनीति का महत्वपूर्ण आधार बना। यह सिद्धांत स्वीकार करता है कि सभी देशों की साझा जिम्मेदारी है, किंतु उनकी ऐतिहासिक भूमिका, आर्थिक क्षमता और विकास की आवश्यकताओं के आधार पर उत्तरदायित्व समान नहीं हो सकते।

जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति का एक महत्वपूर्ण आयाम वैश्विक जलवायु शासन की संस्थागत संरचना है। संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन रूपरेखा अभिसमय, क्योटो प्रोटोकॉल, पेरिस समझौता और विभिन्न कॉन्फ्रेंस ऑफ पार्टीज़ सम्मेलनों के माध्यम से विश्व समुदाय ने जलवायु संकट से निपटने के लिए एक बहुपक्षीय ढाँचा विकसित करने का प्रयास किया है। किंतु इन प्रयासों के बावजूद जलवायु राजनीति में अनेक प्रकार के मतभेद, तनाव और असंतुलन मौजूद हैं। विकसित देश उत्सर्जन–नियंत्रण और नेट–ज़ीरो लक्ष्यों पर अधिक बल देते हैं, जबकि विकासशील देश जलवायु वित्त, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, अनुकूलन क्षमता और विकास के अधिकार को प्राथमिकता देते हैं। इस प्रकार जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति में शक्ति, न्याय, संसाधन और विकासकृसभी के बीच जटिल अंतर्संबंध देखने को मिलते हैं।

भारत इस वैश्विक राजनीति में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और विशिष्ट स्थान रखता है। विश्व की बड़ी जनसंख्या, तीव्र आर्थिक विकास, ऊर्जा की बढ़ती मांग, विकासोन्मुख सामाजिक संरचना और वैश्विक दक्षिण में उसकी नेतृत्वकारी संभावनाएँ उसे जलवायु विमर्श का एक केंद्रीय पक्ष बना देती हैं। भारत एक ओर उन देशों में

eISSN 3049-2610
Research Stream
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 03, Issue 01, March 2026

है जो जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों जैसे अनियमित मानसून, सूखा, बाढ़, चक्रवात, हिमनदों का क्षरण, कृषि संकट, जल–संकट और जैव–विविधता ह्रासकृसे गंभीर रूप से प्रभावित हो रहे हैं; वहीं दूसरी ओर उसे अपनी विशाल जनसंख्या के लिए ऊर्जा, अवसंरचना, औद्योगिक विकास और जीवन–स्तर सुधार की आवश्यकताओं को भी पूरा करना है। इस प्रकार भारत की जलवायु नीति विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन का प्रश्न बन जाती है।

भारत ने अंतरराष्ट्रीय जलवायु विमर्श में लगातार यह स्पष्ट किया है कि जलवायु परिवर्तन से निपटने की वैश्विक रणनीति न्यायपूर्ण होनी चाहिए। भारत का दृष्टिकोण यह रहा है कि विकासशील देशों पर ऐसे दायित्व नहीं डाले जा सकते जो उनके विकास–अधिकार को बाधित करें। इसलिए भारत ने जलवायु न्याय, ब्ठक्त, जलवायु वित्त, तकनीकी हस्तांतरण और सतत विकास को अपनी जलवायु कूटनीति के प्रमुख आधारों के रूप में प्रस्तुत किया है। इसके साथ ही भारत ने नवीकरणीय ऊर्जा, ऊर्जा दक्षता, अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन, हरित विकास, राष्ट्रीय जलवायु कार्ययोजना तथा उत्सर्जन–तीव्रता में कमी जैसे क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण पहल की है। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारत केवल अपने हितों की रक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि वह समाधान का सक्रिय भागीदार बनने का भी प्रयास कर रहा है।

जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति में भारत की भूमिका को समझना इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि भारत की स्थिति बहुआयामी है। वह न तो विकसित देशों की श्रेणी में आता है, न ही वह केवल एक कमजोर और निर्बल विकासशील देश है। भारत एक उभरती हुई शक्ति है, जो एक ओर वैश्विक दक्षिण के सरोकारों का प्रतिनिधित्व करता है और दूसरी ओर वैश्विक शासन संस्थाओं में अपनी प्रभावशाली भूमिका स्थापित करना चाहता है। यही कारण है कि जलवायु वार्ताओं में भारत का दृष्टिकोण केवल रक्षात्मक नहीं, बल्कि रचनात्मक और रणनीतिक भी है। वह वैश्विक उत्तरदायित्व से पूर्णतः विमुख नहीं होता, परंतु वह इस उत्तरदायित्व को न्याय, समता और विकास की आवश्यकताओं से जोड़कर देखता है।

प्रस्तुत अध्ययन "जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति और भारत" के अंतर्गत इसी जटिल संबंध का विश्लेषण करता है। यह अध्ययन इस बात की पड़ताल करता है कि जलवायु परिवर्तन किस प्रकार वैश्विक राजनीति का एक केंद्रीय प्रश्न बन चुका है; विकसित और विकासशील देशों के बीच इसके कारण कौन–कौन से राजनीतिक, आर्थिक और नैतिक विवाद उत्पन्न हुए हैं; तथा भारत इन विवादों के बीच अपने राष्ट्रीय हितों, विकास–प्राथमिकताओं और वैश्विक उत्तरदायित्वों के बीच किस प्रकार संतुलन स्थापित कर रहा है। इस संदर्भ में अध्ययन UNFCCC, क्योटो प्रोटोकॉल, पेरिस समझौता, COP सम्मेलनों, जलवायु वित्त, तकनीकी हस्तांतरण, नवीकरणीय ऊर्जा, नेट–ज़ीरो बहस, तथा वैश्विक दक्षिण की राजनीति जैसे आयामों को शामिल करता है।

यह विषय अकादमिक, नीतिगत और व्यावहारिककृतीनों स्तरों पर अत्यंत महत्वपूर्ण है। अकादमिक दृष्टि से यह अंतरराष्ट्रीय संबंध, पर्यावरण राजनीति और भारतीय विदेश नीति के संगम पर स्थित एक समकालीन विषय है। नीतिगत दृष्टि से यह भारत के विकास मॉडल, ऊर्जा रणनीति, वैश्विक कूटनीति और पर्यावरणीय प्रतिबद्धताओं को समझने में सहायक है। व्यावहारिक दृष्टि से यह विषय इसलिए भी प्रासंगिक है क्योंकि जलवायु परिवर्तन का प्रभाव सीधे भारत के कृषि क्षेत्र, ग्रामीण जीवन, सार्वजनिक स्वास्थ्य, जल–सुरक्षा,

eISSN 3049-2610
Research Stream
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 03, Issue 01, March 2026

आपदा प्रबंधन और आर्थिक नियोजन पर पड़ता है। अतः इस विषय का अध्ययन केवल सैद्धांतिक आवश्यकता नहीं, बल्कि समकालीन राष्ट्रीय और वैश्विक आवश्यकता भी है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति में भारत की भूमिका एक संतुलनकारी, उत्तरदायी और न्याय–समर्थक शक्ति के रूप में उभर रही है। भारत की जलवायु नीति विकास और पर्यावरण के बीच द्वंद्व को समाप्त करने का नहीं, बल्कि दोनों के बीच व्यावहारिक समन्वय स्थापित करने का प्रयास करती है। यही इस अध्ययन की मूल प्रेरणा है। प्रस्तुत शोध के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया जाएगा कि भारत जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति में केवल एक प्रभावित राष्ट्र नहीं, बल्कि एक सक्रिय, विचारशील और संभावित नेतृत्वकारी भूमिका निभाने वाला देश है।

1.1 शोध की आवश्यकता (Need of the Study)– जलवायु परिवर्तन आज केवल एक पर्यावरणीय समस्या नहीं रह गया है, बल्कि यह वैश्विक राजनीति, अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था, विकास–नीति, ऊर्जा–सुरक्षा, खाद्य–सुरक्षा और मानव अस्तित्व से जुड़ा हुआ एक व्यापक संकट बन चुका है। पृथ्वी के औसत तापमान में वृद्धि, अनियमित वर्षा, समुद्र–स्तर में बढ़ोतरी, जैव–विविधता का क्षरण, सूखा, बाढ़, चक्रवात और अन्य प्राकृतिक आपदाएँ यह संकेत करती हैं कि जलवायु परिवर्तन के प्रभाव अब केवल भविष्य की आशंका नहीं, बल्कि वर्तमान की वास्तविकता बन चुके हैं। ऐसे में इस विषय का अध्ययन आवश्यक हो जाता है, क्योंकि जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को समझे बिना न तो वैश्विक राजनीति का सम्यक् विश्लेषण किया जा सकता है और न ही भारत की नीतिगत चुनौतियों को सही रूप में व्याख्यायित किया जा सकता है।

इस शोध की आवश्यकता इसलिए भी है कि जलवायु परिवर्तन के प्रश्न ने अंतरराष्ट्रीय संबंधों में एक नई प्रकार की राजनीति को जन्म दिया है। विकसित और विकासशील देशों के बीच ऐतिहासिक उत्तरदायित्व, कार्बन उत्सर्जन, जलवायु वित्त, तकनीकी हस्तांतरण, विकास के अधिकार तथा पर्यावरणीय न्याय को लेकर निरंतर मतभेद और विमर्श बने हुए हैं। जलवायु परिवर्तन का प्रश्न अब शक्ति–संतुलन, उत्तर–दक्षिण संबंध, बहुपक्षवाद और वैश्विक शासन का एक केंद्रीय विषय बन चुका है। इसलिए यह आवश्यक है कि जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति को केवल वैज्ञानिक या पर्यावरणीय दृष्टिकोण से न देखकर राजनीतिक, आर्थिक और नैतिक परिप्रेक्ष्य में भी समझा जाए।

भारत के संदर्भ में इस अध्ययन की आवश्यकता और अधिक बढ़ जाती है। भारत एक ओर तीव्र आर्थिक विकास, ऊर्जा की बढ़ती मांग, औद्योगिकीकरण, शहरीकरण और गरीबी उन्मूलन जैसी विकासात्मक चुनौतियों का सामना कर रहा है, तो दूसरी ओर वह जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से अत्यंत संवेदनशील देशों में भी सम्मिलित है। भारत में कृषि, जल संसाधन, स्वास्थ्य, आजीविका, तटीय क्षेत्र, पर्वतीय पारिस्थितिकी और ग्रामीण जीवन पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है। इस प्रकार भारत के सामने विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन स्थापित करने की एक जटिल चुनौती उपस्थित है। अतः यह अध्ययन आवश्यक है कि भारत जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति में अपनी भूमिका, नीतियों, दायित्वों और राष्ट्रीय हितों को किस प्रकार संतुलित करता है।

इसके अतिरिक्त, भारत ने अंतरराष्ट्रीय जलवायु कूटनीति में एक महत्त्वपूर्ण और सक्रिय भूमिका निभाई है। पेरिस समझौते, अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन, नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्यों, उत्सर्जन–तीव्रता में कमी, जलवायु न्याय और Common but Differentiated Responsibilities जैसे मुद्दों पर भारत का दृष्टिकोण वैश्विक विमर्श में

eISSN 3049-2610

Research Stream

A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal

Volume 03, Issue 01, March 2026

विशेष महत्व रखता है। अतः इस अध्ययन की आवश्यकता इस कारण भी है कि भारत को केवल जलवायु संकट से प्रभावित राष्ट्र के रूप में नहीं, बल्कि वैश्विक समाधान का सक्रिय साझेदार और वैश्विक दक्षिण की आवाज़ के रूप में भी समझा जा सके।

हिंदी भाषा में इस विषय पर उपलब्ध समकालीन और विश्लेषणात्मक शोध सामग्री अपेक्षाकृत सीमित है। अधिकांश अध्ययन अंग्रेज़ी में उपलब्ध हैं, जिससे हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों और शोधार्थियों के लिए इस विषय का व्यवस्थित अध्ययन कठिन हो जाता है। इसलिए यह शोध हिंदी अकादमिक जगत में जलवायु परिवर्तन, वैश्विक राजनीति और भारत की भूमिका के बीच संबंधों को समझने के लिए एक उपयोगी और प्रासंगिक योगदान सिद्ध हो सकता है।

1.2 समस्या का स्वरूप एवं व्याख्या– प्रस्तुत शोध की केंद्रीय समस्या यह है कि जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति में भारत की स्थिति, भूमिका और नीति–दृष्टि को किस प्रकार समझा जाए। जलवायु परिवर्तन एक ऐसा वैश्विक संकट है, जो सभी देशों को प्रभावित करता है, किंतु उसके कारण, प्रभाव और समाधान के दायित्व सभी देशों के लिए समान नहीं हैं। विकसित देशों ने ऐतिहासिक रूप से सर्वाधिक कार्बन उत्सर्जन किया है, जबकि विकासशील देश अपेक्षाकृत कम उत्सर्जन के बावजूद जलवायु परिवर्तन के गंभीर दुष्प्रभावों का सामना कर रहे हैं। इस असमानता ने अंतरराष्ट्रीय जलवायु वार्ताओं में न्याय, उत्तरदायित्व और संसाधन–वितरण के प्रश्न को अत्यंत जटिल बना दिया है। यही इस शोध–समस्या का मूल स्वरूप है।

समस्या का दूसरा पक्ष भारत की विशिष्ट स्थिति से जुड़ा है। भारत एक विशाल जनसंख्या वाला विकासशील देश है, जिसे आर्थिक विकास, ऊर्जा उपलब्धता, बुनियादी ढाँचे के विस्तार, औद्योगिक प्रगति और सामाजिक न्याय की दिशा में निरंतर आगे बढ़ना है। साथ ही, भारत उन देशों में भी है जो जलवायु परिवर्तन के प्रभावों जैसे अनियमित मानसून, बाढ़, सूखा, हीट वेव, जल संकट, कृषि अस्थिरता और तटीय जोखिम से व्यापक रूप से प्रभावित हैं। ऐसी स्थिति में यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि भारत किस प्रकार विकास की आवश्यकताओं और पर्यावरणीय उत्तरदायित्वों के बीच संतुलन स्थापित करता है।

समस्या का तीसरा आयाम वैश्विक जलवायु शासन की प्रकृति से जुड़ा है। संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन रूपरेखा अभिसमय, क्योटो प्रोटोकॉल, पेरिस समझौता और ब्व्च सम्मेलनों के माध्यम से जलवायु संकट से निपटने के लिए बहुपक्षीय ढाँचा विकसित किया गया है, किंतु इन मंचों पर विकसित और विकासशील देशों के हित अक्सर परस्पर विरोधी दिखाई देते हैं। विकसित देश उत्सर्जन कटौती और नेट–ज़ीरो लक्ष्यों पर जोर देते हैं, जबकि विकासशील देश जलवायु वित्त, तकनीकी हस्तांतरण, अनुकूलन क्षमता और न्यायपूर्ण उत्तरदायित्व की माँग करते हैं। ऐसे परिदृश्य में भारत की नीति किस प्रकार अपनी राष्ट्रीय आवश्यकताओं, अंतरराष्ट्रीय दायित्वों और वैश्विक दक्षिण के हितों के बीच समन्वय स्थापित करती है, यह एक महत्वपूर्ण शोध–समस्या है।

अतः इस अध्ययन की समस्या केवल यह नहीं है कि भारत जलवायु परिवर्तन से कितना प्रभावित है, बल्कि यह भी है कि भारत वैश्विक जलवायु राजनीति में किस प्रकार अपनी कूटनीतिक भूमिका का निर्वहन करता है, जलवायु न्याय की अवधारणा को किस सीमा तक आगे बढ़ाता है, और वैश्विक जलवायु शासन में किस

eISSN 3049-2610
Research Stream
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 03, Issue 01, March 2026

प्रकार एक उत्तरदायी तथा संतुलनकारी शक्ति के रूप में स्वयं को स्थापित करता है। यही प्रश्न इस शोध की व्याख्या का केंद्र है।

1.3 अध्ययन का औचित्य– इस अध्ययन का औचित्य अनेक स्तरों पर स्थापित होता है। प्रथम, जलवायु परिवर्तन वर्तमान समय का एक ऐसा वैश्विक संकट है, जिसने विश्व राजनीति, विकास नीति और अंतरराष्ट्रीय सहयोग की दिशा को गहराई से प्रभावित किया है। इसलिए जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति का अध्ययन समकालीन अंतरराष्ट्रीय संबंधों की समझ के लिए अत्यंत आवश्यक है। यह विषय केवल पर्यावरण संरक्षण तक सीमित नहीं है, बल्कि वैश्विक न्याय, शक्ति–संतुलन, बहुपक्षीय संस्थाओं, आर्थिक असमानताओं और विकास के अधिकार जैसे बड़े प्रश्नों से जुड़ा हुआ है। द्वितीय, भारत की स्थिति इस विषय को और अधिक प्रासंगिक बनाती है। भारत एक ओर वैश्विक दक्षिण का प्रमुख प्रतिनिधि है, वहीं दूसरी ओर वह एक उभरती हुई अर्थव्यवस्था और बढ़ती हुई वैश्विक शक्ति भी है। भारत की जलवायु नीति में विकास, ऊर्जा–सुरक्षा, पर्यावरणीय प्रतिबद्धता, नवीकरणीय ऊर्जा, तकनीकी नवाचार और अंतरराष्ट्रीय कूटनीति इन सभी का समन्वय दिखाई देता है। अतः इस अध्ययन का औचित्य इस बात में निहित है कि यह भारत की जलवायु–राजनीति को व्यापक वैश्विक संदर्भ में समझने का अवसर प्रदान करता है।

तृतीय, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव भारत के सामाजिक और आर्थिक जीवन पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ रहे हैं। कृषि, जल संसाधन, तटीय क्षेत्र, सार्वजनिक स्वास्थ्य, आजीविका, ऊर्जा और आपदा प्रबंधन जैसे क्षेत्रों पर इसका गंभीर असर है। इसलिए यह अध्ययन केवल अंतरराष्ट्रीय राजनीति की दृष्टि से ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय नीति–निर्माण, विकास–योजना और सतत विकास की रणनीतियों के लिए भी उपयोगी है।

चतुर्थ, जलवायु न्याय, CBDR, जलवायु वित्त, तकनीकी हस्तांतरण और अनुकूलन जैसे मुद्दों पर भारत का दृष्टिकोण वैश्विक विमर्श में अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत ने अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन, नवीकरणीय ऊर्जा विस्तार, पेरिस समझौते के प्रति प्रतिबद्धता और वैश्विक दक्षिण की चिंताओं को प्रमुखता देकर एक रचनात्मक भूमिका निभाई है। अतः इस अध्ययन का औचित्य इस तथ्य से भी सिद्ध होता है कि यह भारत को केवल समस्या–ग्रस्त देश के रूप में नहीं, बल्कि समाधान–उन्मुख वैश्विक भागीदार के रूप में प्रस्तुत करता है।

पंचम, हिंदी में इस विषय पर व्यवस्थित और विश्लेषणात्मक साहित्य की कमी इस अध्ययन को और अधिक औचित्यपूर्ण बनाती है। यह शोध हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों, शोधार्थियों और अध्यापकों के लिए उपयोगी शैक्षिक सामग्री उपलब्ध कराएगा तथा पर्यावरणीय राजनीति और भारत की भूमिका पर हिंदी अकादमिक विमर्श को समृद्ध करेगा।

1.4 अध्ययन के उद्देश्य– प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1 जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति की अवधारणा, स्वरूप और प्रमुख आयामों का अध्ययन करना।
2 वैश्विक जलवायु शासन की प्रमुख संस्थाओं, संधियों और समझौतों जैसे UNFCCC, क्योटो प्रोटोकॉल और पेरिस समझौता का विश्लेषण करना।
3 विकसित और विकासशील देशों के बीच जलवायु उत्तरदायित्व, जलवायु न्याय और CBDR के प्रश्नों का परीक्षण करना।
4 जलवायु परिवर्तन के प्रति भारत की नीति, दृष्टिकोण और कूटनीतिक भूमिका का अध्ययन करना।

eISSN 3049-2610
Research Stream
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 03, Issue 01, March 2026

5 जलवायु परिवर्तन के भारत पर पड़ने वाले सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय प्रभावों का विश्लेषण करना।

6 भारत की जलवायु नीति में विकास, ऊर्जा–सुरक्षा और पर्यावरणीय उत्तरदायित्व के बीच संतुलन की प्रकृति को समझना।

7 अंतरराष्ट्रीय जलवायु वार्ताओं, COP सम्मेलनों और वैश्विक दक्षिण के संदर्भ में भारत की भूमिका का मूल्यांकन करना।

8 नवीकरणीय ऊर्जा, जलवायु वित्त, तकनीकी हस्तांतरण और सतत विकास के संदर्भ में भारत की संभावनाओं और चुनौतियों का अध्ययन करना।

9 यह आकलन करना कि जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति में भारत किस सीमा तक एक उत्तरदायी, सक्रिय और नेतृत्वकारी शक्ति के रूप में उभर रहा है।

1.5 शोध–प्रश्न– प्रस्तुत अध्ययन निम्नलिखित शोध–प्रश्नों पर आधारित है–

1 जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?

2 वैश्विक जलवायु शासन में विकसित और विकासशील देशों के बीच मुख्य विवाद किन प्रश्नों पर केंद्रित हैं?

3 "जलवायु न्याय" और Common but Differentiated Responsibilities की अवधारणाएँ वैश्विक जलवायु राजनीति को किस प्रकार प्रभावित करती हैं?

4 भारत जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति में अपनी भूमिका और नीति–दृष्टि को किस प्रकार परिभाषित करता है?

5 जलवायु परिवर्तन के सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय प्रभाव भारत को किस प्रकार प्रभावित करते हैं?

6 भारत विकास, ऊर्जा–सुरक्षा और पर्यावरणीय उत्तरदायित्वों के बीच किस प्रकार संतुलन स्थापित करता है?

7 पेरिस समझौते, ब्ब्ब् सम्मेलनों और अंतरराष्ट्रीय जलवायु कूटनीति में भारत की भूमिका कितनी प्रभावशाली रही है?

8 क्या भारत जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति में केवल एक प्रभावित देश है, या वह एक सक्रिय, संतुलनकारी और नेतृत्वकारी शक्ति के रूप में भी उभर रहा है?

9 भविष्य में जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति में भारत के समक्ष कौन–कौन सी प्रमुख चुनौतियाँ और संभावनाएँ विद्यमान हैं?

1.6 अध्ययन की परिधि एवं सीमाएँ– प्रस्तुत शोध "जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति और भारत" समकालीन अंतरराष्ट्रीय राजनीति, पर्यावरणीय संकट और भारत की नीति–भूमिका के अंतर्संबंधों का अध्ययन है। इस शोध की परिधि मुख्यतः जलवायु परिवर्तन के वैश्विक राजनीतिक आयामों तथा भारत की भूमिका, नीतियों, चुनौतियों और संभावनाओं के विश्लेषण तक सीमित है। अध्ययन में जलवायु परिवर्तन को केवल एक पर्यावरणीय समस्या के रूप में नहीं, बल्कि वैश्विक शासन, अंतरराष्ट्रीय वार्ताओं, उत्तर–दक्षिण संबंधों, जलवायु न्याय, विकास–अधिकार, ऊर्जा–सुरक्षा और पर्यावरणीय उत्तरदायित्व से जुड़े राजनीतिक प्रश्न के रूप में देखा जाएगा।

eISSN 3049-2610
Research Stream
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 03, Issue 01, March 2026

विषय की परिधि में संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन रूपरेखा अभिसमय, क्योटो प्रोटोकॉल, पेरिस समझौता, कॉन्फ्रेंस ऑफ पार्टीज़, सम्मेलनों, जलवायु वित्त, तकनीकी हस्तांतरण, कार्बन उत्सर्जन, जलवायु न्याय, "समान किंतु विभेदित उत्तरदायित्व", सतत विकास, नवीकरणीय ऊर्जा और भारत की जलवायु कूटनीति जैसे प्रमुख आयामों को सम्मिलित किया जाएगा। अध्ययन में विशेष ध्यान इस बात पर केंद्रित रहेगा कि भारत एक विकासशील देश, वैश्विक दक्षिण के प्रतिनिधि और उभरती वैश्विक शक्ति के रूप में जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति में अपनी स्थिति कैसे निर्मित करता है।

कालगत दृष्टि से यह अध्ययन मुख्यतः इक्कीसवीं सदी के जलवायु विमर्श पर केंद्रित रहेगा, विशेषकर क्योटो प्रोटोकॉल के बाद से पेरिस समझौते और वर्तमान वैश्विक जलवायु राजनीति तक। तथापि विषय की पृष्ठभूमि को स्पष्ट करने के लिए जलवायु परिवर्तन संबंधी अंतरराष्ट्रीय चिंताओं के प्रारंभिक विकास और वैश्विक पर्यावरणीय शासन की ऐतिहासिक यात्रा का संक्षिप्त उल्लेख भी किया जाएगा। भारत के संदर्भ में अध्ययन उसकी राष्ट्रीय जलवायु नीतियों, नवीकरणीय ऊर्जा कार्यक्रमों, अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन, उत्सर्जन–तीव्रता में कमी के प्रयासों तथा जलवायु न्याय संबंधी कूटनीतिक दृष्टिकोण तक सीमित रहेगा।

अध्ययन की सीमाओं की दृष्टि से प्रथम यह स्वीकार करना आवश्यक है कि जलवायु परिवर्तन एक अत्यंत व्यापक और बहुविषयी विषय है, जिसमें विज्ञान, पर्यावरण, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, प्रौद्योगिकी और राजनीति सभी का योगदान है। प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य फोकस राजनीतिक एवं नीतिगत पक्ष पर है, इसलिए जलवायु परिवर्तन के वैज्ञानिक या तकनीकी पक्षों का केवल उतना ही विवेचन किया जाएगा, जितना विषय की समझ के लिए आवश्यक होगा।

द्वितीय, यह शोध मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। अतः पुस्तकों, शोध–पत्रों, सरकारी दस्तावेजों, अंतरराष्ट्रीय रिपोर्टों, नीति–पत्रों और विश्वसनीय ऑनलाइन स्रोतों से प्राप्त तथ्यों के आधार पर विश्लेषण किया जाएगा। इस कारण अध्ययन में प्राथमिक सर्वेक्षण, साक्षात्कार या क्षेत्रकार्य की भूमिका सीमित रहेगी।

तृतीय, जलवायु राजनीति एक गतिशील और निरंतर परिवर्तित होने वाला क्षेत्र है। अंतरराष्ट्रीय वार्ताओं, ब्व्च सम्मेलनों, राष्ट्रीय प्रतिज्ञाओं और वैश्विक नीति–संदर्भों में समय–समय पर परिवर्तन होते रहते हैं। अतः इस शोध के निष्कर्ष अध्ययन–काल तक उपलब्ध तथ्यों और नीतिगत स्थितियों पर आधारित होंगे।

चतुर्थ, प्रस्तुत अध्ययन में भारत की भूमिका केंद्र में है, इसलिए अन्य देशों की नीतियों का विश्लेषण केवल तुलनात्मक और संदर्भात्मक स्तर तक सीमित रहेगा। इस प्रकार अध्ययन का उद्देश्य संपूर्ण वैश्विक जलवायु राजनीति का विश्वकोशीय विवरण देना नहीं, बल्कि भारत के संदर्भ में इसके प्रमुख राजनीतिक, कूटनीतिक और नीतिगत आयामों को व्यवस्थित रूप से स्पष्ट करना है।

1.7 परिकल्पना– प्रस्तुत शोध निम्नलिखित परिकल्पनाओं पर आधारित है–

1 जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति विकसित और विकासशील देशों के बीच उत्तरदायित्व, संसाधन और न्याय के प्रश्नों पर आधारित है।

2 भारत जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति में जलवायु न्याय, समान किंतु विभेदित उत्तरदायित्व और विकास–अधिकार के सिद्धांतों का समर्थक है।

3 भारत की जलवायु नीति पर्यावरणीय उत्तरदायित्व और आर्थिक विकास के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती है।

eISSN 3049-2610
Research Stream
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 03, Issue 01, March 2026

4 अंतरराष्ट्रीय जलवायु वार्ताओं में भारत केवल एक प्रभावित राष्ट्र नहीं, बल्कि एक सक्रिय और संतुलनकारी कूटनीतिक शक्ति के रूप में उभर रहा है।
5 जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव भारत के सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय ढाँचे को गंभीर रूप से प्रभावित कर रहे हैं, जिसके कारण जलवायु नीति भारत की राष्ट्रीय नीति का महत्वपूर्ण अंग बन चुकी है।
6 नवीकरणीय ऊर्जा, अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन और सतत विकास संबंधी पहलों के माध्यम से भारत वैश्विक जलवायु शासन में रचनात्मक भूमिका निभा रहा है।

1.8 शोध प्राविधि– प्रस्तुत शोध मुख्यतः गुणात्मक प्रकृति का है। इसका उद्देश्य जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति तथा भारत की भूमिका का विश्लेषण करना है, न कि मात्र सांख्यिकीय आंकड़ों का संकलन। इसलिए इस अध्ययन में वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक और व्याख्यात्मक शोध–पद्धति का समन्वित प्रयोग किया जाएगा।

वर्णनात्मक पद्धति के माध्यम से जलवायु परिवर्तन की अवधारणा, वैश्विक राजनीति के प्रमुख आयाम, अंतरराष्ट्रीय जलवायु शासन की संस्थाएँ, समझौते और भारत की जलवायु नीति का व्यवस्थित प्रस्तुतीकरण किया जाएगा। विश्लेषणात्मक पद्धति द्वारा विकसित और विकासशील देशों के बीच उत्तरदायित्व, जलवायु न्याय, जलवायु वित्त, तकनीकी हस्तांतरण और भारत की कूटनीतिक स्थिति का परीक्षण किया जाएगा। व्याख्यात्मक पद्धति के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि भारत किस प्रकार विकास, ऊर्जा–सुरक्षा और पर्यावरणीय उत्तरदायित्वों के बीच संतुलन स्थापित करता है।

इस शोध में ऐतिहासिक पद्धति का भी सहायक रूप से उपयोग होगा, क्योंकि जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति की वर्तमान स्थिति को समझने के लिए अंतरराष्ट्रीय पर्यावरणीय शासन के विकास–क्रम को जानना आवश्यक है। इस संदर्भ में स्टॉकहोम सम्मेलन, रियो पृथ्वी सम्मेलन, UNFCCC, क्योटो प्रोटोकॉल, पेरिस समझौता और COP सम्मेलनों की पृष्ठभूमि का संक्षिप्त विश्लेषण किया जाएगा।

शोध में तुलनात्मक पद्धति का सीमित उपयोग भी किया जाएगा, विशेषकर विकसित और विकासशील देशों की नीतियों, दायित्वों और दृष्टिकोणों के तुलनात्मक विवेचन में। इससे यह स्पष्ट किया जा सकेगा कि वैश्विक जलवायु राजनीति में असमानता, न्याय और उत्तरदायित्व के प्रश्न किस प्रकार उभरते हैं। साथ ही भारत की स्थिति की तुलना अन्य विकासशील देशों और प्रमुख वैश्विक शक्तियों से भी संदर्भात्मक स्तर पर की जाएगी।

अध्ययन में नीति–विश्लेषण (Policy Analysis) की पद्धति भी महत्त्वपूर्ण रहेगी। भारत की राष्ट्रीय जलवायु कार्ययोजना, नवीकरणीय ऊर्जा नीति, उत्सर्जन–तीव्रता में कमी के प्रयास, अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन, और पेरिस समझौते के अंतर्गत राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (NDCs) जैसे पक्षों का नीति–आधारित विश्लेषण किया जाएगा।

इस प्रकार प्रस्तुत शोध बहुआयामी पद्धति पर आधारित है, जिसमें वर्णन, विश्लेषण, व्याख्या, तुलनात्मक अध्ययन और नीति–परीक्षण के माध्यम से विषय को समग्र रूप में समझने का प्रयास किया जाएगा।

1.9 तथ्य–संकलन के स्रोत– प्रस्तुत शोध में तथ्य–संकलन के लिए मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया जाएगा। चूँकि विषय अंतरराष्ट्रीय राजनीति, पर्यावरणीय शासन और भारत की नीति–भूमिका से

eISSN 3049-2610
Research Stream
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 03, Issue 01, March 2026

संबंधित है, इसलिए विविध प्रकार के प्रामाणिक स्रोतों से सामग्री संकलित की जाएगी, ताकि अध्ययन अधिक संतुलित, विश्वसनीय और अद्यतन हो सके।

सबसे पहले, पुस्तकें तथ्य–संकलन का महत्वपूर्ण आधार होंगी। जलवायु परिवर्तन, वैश्विक राजनीति, पर्यावरणीय शासन, अंतरराष्ट्रीय संबंध, जलवायु न्याय, भारत की जलवायु नीति और पर्यावरणीय कूटनीति से संबंधित हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं की मान्यताप्राप्त पुस्तकों का उपयोग किया जाएगा। इनसे विषय की सैद्धांतिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि स्पष्ट होगी।

दूसरे, शोध–पत्र, जर्नल लेख और समीक्षित अकादमिक पत्रिकाएँ उपयोग में लाई जाएँगी। अंतरराष्ट्रीय संबंध, पर्यावरण राजनीति, वैश्विक शासन, सतत विकास और भारतीय विदेश नीति से संबंधित पत्रिकाओं में प्रकाशित शोध–लेखों के माध्यम से समकालीन बहसों, सिद्धांतों और निष्कर्षों का अध्ययन किया जाएगा।

तीसरे, सरकारी दस्तावेज और आधिकारिक रिपोर्टें शोध के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण स्रोत होंगी। भारत सरकार के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, विदेश मंत्रालय, नीति आयोग, ऊर्जा मंत्रालय तथा अन्य संबंधित विभागों के प्रकाशनों, वार्षिक प्रतिवेदनों, नीति–पत्रों और आधिकारिक वक्तव्यों का उपयोग किया जाएगा। इससे भारत की आधिकारिक जलवायु नीति, राष्ट्रीय योजनाओं और अंतरराष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं की प्रामाणिक जानकारी प्राप्त होगी।

चौथे, अंतरराष्ट्रीय संगठनों की रिपोर्टें और दस्तावेज महत्त्वपूर्ण स्रोत होंगे। संयुक्त राष्ट्र, IPCC, UNFCCC,UNEP, UNDP, विश्व बैंक, IMF, IEA तथा अन्य संस्थाओं की रिपोर्टों और दस्तावेजों से वैश्विक तापवृद्धि, उत्सर्जन, जलवायु वित्त, अनुकूलन, ऊर्जा संक्रमण और अंतरराष्ट्रीय वार्ताओं से जुड़े तथ्य एकत्र किए जाएँगे।

पाँचवें, थिंक–टैंक और नीति–अध्ययन संस्थानों की रिपोर्टों का भी उपयोग किया जाएगा। जैसे —Observer Research Foundation ORF, TERI, CEEW, Brookings Institution, Chatham House, Carnegie Endowment, Stockholm Environment Institute आदि संस्थानों की रिपोर्टें इस विषय के रणनीतिक और नीतिगत विश्लेषण को समृद्ध करेंगी।

छठे, आधिकारिक वेबसाइटों और डिजिटल अभिलेखागार से अद्यतन सूचनाएँ प्राप्त की जाएँगी। UNFCCC, IPCC, भारत सरकार, अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन, COP सम्मेलनों और अन्य संबंधित संस्थाओं की आधिकारिक वेबसाइटों से घोषणाएँ, संधि–पाठ, सांख्यिकीय विवरण और नीतिगत सामग्री प्राप्त की जाएगी।

सातवें, भाषण, व्याख्यान, नीति–निर्माताओं के वक्तव्य और अंतरराष्ट्रीय घोषणाएँ भी उपयोगी स्रोत होंगे। भारत के प्रधानमंत्रियों, पर्यावरण मंत्रियों, विदेश नीति विशेषज्ञों, संयुक्त राष्ट्र अधिकारियों तथा COP सम्मेलनों में दिए गए वक्तव्यों के माध्यम से नीतिगत दृष्टिकोण और कूटनीतिक रुख को समझा जाएगा।

आठवें, विश्वसनीय समाचार–पत्रों, पत्रिकाओं और ऑनलाइन स्रोतों का सहायक रूप में उपयोग किया जाएगा। समकालीन घटनाओं, जलवायु सम्मेलनों, अंतरराष्ट्रीय प्रतिक्रियाओं और नीतिगत परिवर्तनों को समझने के लिए ऐसे स्रोतों का सावधानीपूर्वक उपयोग किया जाएगा।

eISSN 3049-2610
Research Stream
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 03, Issue 01, March 2026

इस प्रकार प्रस्तुत शोध में पुस्तकों, शोध–पत्रों, सरकारी दस्तावेजों, अंतरराष्ट्रीय रिपोर्टों, थिंक–टैंक विश्लेषणों, आधिकारिक वेबसाइटों, भाषणों और विश्वसनीय समाचार–स्रोतों का समन्वित उपयोग करके तथ्य–संकलन किया जाएगा।

1.10 साहित्य समीक्षा (Review of Literature)– जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति और भारत पर उपलब्ध साहित्य बहुआयामी, अंतःविषय और निरंतर विकसित होता हुआ क्षेत्र है। इस विषय पर उपलब्ध साहित्य को broadly चार भागों में समझा जा सकता है, पहला, जलवायु परिवर्तन और वैश्विक पर्यावरणीय संकट पर सैद्धांतिक साहित्य; दूसरा, वैश्विक जलवायु शासन और अंतरराष्ट्रीय वार्ताओं पर साहित्य; तीसरा, जलवायु न्याय, उत्तर–दक्षिण संबंध और विकास–अधिकार पर विमर्श; और चौथा, भारत की जलवायु नीति, पर्यावरणीय कूटनीति और वैश्विक भूमिका पर केंद्रित साहित्य।

जलवायु परिवर्तन के वैज्ञानिक और वैचारिक आधार को समझने में IPCC की आकलन रिपोर्टें अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती हैं। ये रिपोर्टें वैश्विक तापवृद्धि, मानव–जनित कारकों, समुद्र–स्तर वृद्धि, जैव–विविधता क्षरण और भविष्य की पर्यावरणीय चुनौतियों का वैज्ञानिक आधार प्रदान करती हैं। यद्यपि ये रिपोर्टें मूलतः वैज्ञानिक प्रकृति की हैं, फिर भी इन्होंने जलवायु परिवर्तन को अंतरराष्ट्रीय राजनीति के केंद्र में स्थापित करने में निर्णायक भूमिका निभाई है।

वैश्विक पर्यावरणीय राजनीति के अध्ययन में Peter Newell, Matthew Paterson, Robert Falkner और Harriet Bulkeley जैसे विद्वानों का योगदान विशेष उल्लेखनीय है। इन्होंने जलवायु परिवर्तन को केवल पर्यावरणीय संकट नहीं, बल्कि वैश्विक शासन, शक्ति–संबंध, आर्थिक असमानता और अंतरराष्ट्रीय वार्ताओं के संदर्भ में समझने का प्रयास किया है। इनके अध्ययन यह स्पष्ट करते हैं कि जलवायु परिवर्तन की राजनीति बहुपक्षवाद, उत्तर–दक्षिण संघर्ष, वैश्विक पूँजीवाद, और विकास की अवधारणा से गहराई से जुड़ी हुई है।

जलवायु न्याय, ऐतिहासिक उत्तरदायित्व और Common but Differentiated Responsibilities CBDR के प्रश्नों पर Henry Shue, Anil Agarwal और Sunita Narain जैसे विचारकों ने महत्वपूर्ण बहस को आगे बढ़ाया है। विशेषकर विकासशील देशों के दृष्टिकोण से प्रस्तुत तर्क यह स्थापित करते हैं कि जलवायु परिवर्तन का बोझ समान रूप से वितरित नहीं है, इसलिए समाधान भी न्यायपूर्ण और विभेदित दायित्वों पर आधारित होना चाहिए। भारतीय और वैश्विक दक्षिण की दृष्टि से यह साहित्य अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यही भारत की जलवायु कूटनीति के वैचारिक आधार को समझने में सहायक होता है।

वैश्विक जलवायु शासन, UNFCCC, क्योटो प्रोटोकॉल और पेरिस समझौते पर अनेक अध्ययनों ने यह दर्शाया है कि जलवायु वार्ताएँ केवल पर्यावरणीय प्रतिबद्धताओं का प्रश्न नहीं, बल्कि वैश्विक शक्ति–राजनीति, वित्त, तकनीकी नियंत्रण और अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा से भी जुड़ी हुई हैं। Lavanya Rajamani और Daniel Bodansky जैसे विद्वानों ने अंतरराष्ट्रीय जलवायु कानून और वैश्विक समझौतों की संरचना, जटिलताओं और सीमाओं पर गंभीर कार्य किया है। इनके अध्ययन यह समझने में उपयोगी हैं कि जलवायु समझौते किस प्रकार कानूनी, राजनीतिक और नैतिक आयामों का संयोजन हैं।

भारत की भूमिका के संदर्भ में उपलब्ध साहित्य अपेक्षाकृत समृद्ध है, किंतु अधिकांशतः अंग्रेज़ी भाषा में केंद्रित है। Navroz K- Dubash, Lavanya Rajamani, Amitabh Mattoo, C- Raja Mohan, Harsh V- Pant, तथा Shyam Saran जैसे विद्वानों और नीति–विश्लेषकों ने भारत की जलवायु नीति, ऊर्जा–सुरक्षा, अंतरराष्ट्रीय वार्ताओं में

eISSN 3049-2610
Research Stream
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 03, Issue 01, March 2026

उसकी भूमिका, और विकास बनाम पर्यावरण के प्रश्नों पर गहन विचार प्रस्तुत किए हैं। भारत के संदर्भ में यह साहित्य यह बताता है कि भारत की जलवायु नीति केवल प्रतिरोधात्मक नहीं रही, बल्कि समय के साथ अधिक रचनात्मक, व्यावहारिक और समाधानोन्मुख हुई है।

विशेष रूप से Navroz K- Dubash के अध्ययन भारत की जलवायु नीति के आंतरिक और बाहरी आयामों को समझने में उपयोगी हैं। उन्होंने भारत की जलवायु नीति को विकासात्मक प्राथमिकताओं, ऊर्जा–नीति, घरेलू राजनीति और वैश्विक वार्ताओं के संदर्भ में व्याख्यायित किया है। इसी प्रकार Lavanya Rajamani ने अंतरराष्ट्रीय जलवायु वार्ताओं में भारत की कानूनी और कूटनीतिक स्थिति पर महत्वपूर्ण कार्य किया है। Shyam Saran ने नीति–निर्माण और जलवायु कूटनीति के व्यावहारिक पक्षों को स्पष्ट किया है, जिससे भारत के आधिकारिक दृष्टिकोण को समझने में सहायता मिलती है।

भारत की नवीकरणीय ऊर्जा नीति, अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन और हरित विकास की दिशा में प्रयासों पर भी पर्याप्त साहित्य उपलब्ध है। इन अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि भारत ने जलवायु राजनीति में केवल न्याय और दायित्व का प्रश्न नहीं उठाया, बल्कि सौर ऊर्जा, ऊर्जा दक्षता, हरित प्रौद्योगिकी और सतत विकास के क्षेत्रों में ठोस पहल भी की है।

हालाँकि उपलब्ध साहित्य समृद्ध है, फिर भी कुछ शोध–अंतराल स्पष्ट हैं। प्रथम, हिंदी भाषा में इस विषय पर विश्लेषणात्मक और समकालीन साहित्य अपेक्षाकृत कम है। द्वितीय, कई अध्ययन जलवायु परिवर्तन के वैज्ञानिक या पर्यावरणीय पक्ष पर केंद्रित हैं, जबकि वैश्विक राजनीति और भारत की कूटनीतिक भूमिका का समग्र अध्ययन सीमित है। तृतीय, भारत की भूमिका को कभी–कभी केवल विकासशील देश के दृष्टिकोण से देखा गया है, जबकि उसकी उभरती हुई वैश्विक शक्ति और समाधानोन्मुख भागीदारी पर अपेक्षाकृत कम बल दिया गया है।

इन्हीं शोध–अंतरालों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन "जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति और भारत" विषय को समग्र, संतुलित और विश्लेषणात्मक रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास करेगा। यह अध्ययन वैश्विक जलवायु राजनीति की संरचना, उसमें निहित न्याय और शक्ति के प्रश्नों, तथा भारत की नीति–भूमिका को हिंदी अकादमिक परिप्रेक्ष्य में स्पष्ट करेगा।

1.11 डेटा विश्लेषण– प्रस्तुत शोध "जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति और भारत" मुख्यतः गुणात्मक प्रकृति का है, अतः इसमें डेटा विश्लेषण का स्वरूप सांख्यिकीय गणना की अपेक्षा व्याख्यात्मक, तुलनात्मक तथा विषय–वस्तु विश्लेषण पर आधारित है। इस अध्ययन में संकलित तथ्यों, नीति–दस्तावेजों, अंतरराष्ट्रीय समझौतों, सरकारी प्रतिवेदनों, शोध–पत्रों, अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की रिपोर्टों तथा विश्वसनीय स्रोतों से प्राप्त सूचनाओं का विश्लेषण इस उद्देश्य से किया गया है कि जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति की प्रकृ ति, उसमें शक्ति–संबंधों की भूमिका, विकसित और विकासशील देशों के मध्य उत्तरदायित्व के विवाद, तथा भारत की नीति–दृष्टि और कूटनीतिक स्थिति को स्पष्ट रूप से समझा जा सके।

विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि जलवायु परिवर्तन का प्रश्न अब केवल वैज्ञानिक या पर्यावरणीय समस्या नहीं है, बल्कि यह वैश्विक शक्ति–संतुलन, विकास–अधिकार, संसाधन–वितरण और न्याय के प्रश्नों से गहराई से जुड़ चुका है। वैश्विक जलवायु शासन की संरचनाएँ जैसे UNFCCC, क्योटो प्रोटोकॉल, पेरिस समझौता और COP सम्मेलन एक ओर बहुपक्षीय सहयोग की आवश्यकता को रेखांकित करती हैं, वहीं दूसरी

eISSN 3049-2610
Research Stream
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 03, Issue 01, March 2026

ओर वे विकसित और विकासशील देशों के बीच उत्तरदायित्व, जलवायु वित्त, अनुकूलन, तकनीकी हस्तांतरण और ऐतिहासिक उत्सर्जन को लेकर गहरे मतभेदों को भी सामने लाती हैं। इस प्रकार डेटा यह संकेत करता है कि जलवायु राजनीति वस्तुतः एक ऐसी वैश्विक राजनीतिक प्रक्रिया है जिसमें पर्यावरणीय प्रश्नों के साथ–साथ आर्थिक और सामरिक हित भी सक्रिय रहते हैं।

विश्लेषण का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि विकसित देशों ने ऐतिहासिक रूप से औद्योगिकीकरण के माध्यम से बड़े पैमाने पर कार्बन उत्सर्जन किया है, जबकि विकासशील देश अपेक्षाकृत कम ऐतिहासिक योगदान के बावजूद जलवायु संकट के गंभीर परिणामों को अधिक झेल रहे हैं। उपलब्ध अंतरराष्ट्रीय रिपोर्टों और नीति–बहसों का विश्लेषण यह दर्शाता है कि यही असमानता जलवायु न्याय की अवधारणा को जन्म देती है। "समान किंतु विभेदित उत्तरदायित्व" (CBDR) का सिद्धांत इसी असमानता के राजनीतिक समाधान के रूप में उभरता है। इससे यह सिद्ध होता है कि जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति में न्याय और उत्तरदायित्व के प्रश्न केवल नैतिक नहीं, बल्कि गहरे राजनीतिक स्वरूप वाले हैं।

भारत के संदर्भ में विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि उसकी स्थिति बहुआयामी और जटिल है। भारत एक ओर उन देशों में है जो जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों जैसे अनियमित मानसून, सूखा, बाढ़, चक्रवात, हीट वेव, जल संकट, कृषि–उत्पादन में अस्थिरता और तटीय जोखिम से अत्यधिक प्रभावित हैं; दूसरी ओर भारत को अपनी विशाल जनसंख्या के लिए आर्थिक विकास, ऊर्जा–सुरक्षा, औद्योगिकीकरण, आधारभूत संरचना और गरीबी उन्मूलन की आवश्यकताओं को भी पूरा करना है। इस द्वंद्वात्मक स्थिति का विश्लेषण यह संकेत करता है कि भारत की जलवायु नीति एक संतुलनकारी नीति है, जो न तो विकास को त्यागना चाहती है और न ही पर्यावरणीय उत्तरदायित्वों से विमुख होना चाहती है।

उपलब्ध नीतिगत दस्तावेजों और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत के रुख का विश्लेषण यह दर्शाता है कि भारत ने जलवायु न्याय, CBDR, जलवायु वित्त और तकनीकी हस्तांतरण जैसे मुद्दों पर निरंतर विकासशील देशों के हितों का समर्थन किया है। भारत ने यह तर्क प्रस्तुत किया है कि विकासशील देशों पर ऐसे दायित्व नहीं डाले जा सकते, जो उनकी विकास–प्रक्रिया, ऊर्जा–अधिकार और सामाजिक न्याय की आवश्यकताओं में बाधा उत्पन्न करें। इस विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि भारत की जलवायु कूटनीति मूलतः न्याय–आधारित, विकासोन्मुख और वैश्विक दक्षिण के दृष्टिकोण से प्रेरित है।

साथ ही, डेटा विश्लेषण यह भी दर्शाता है कि भारत की भूमिका केवल प्रतिरोधात्मक या मांग–आधारित नहीं रही है। भारत ने नवीकरणीय ऊर्जा विस्तार, अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन, ऊर्जा दक्षता, हरित विकास, राष्ट्रीय जलवायु कार्ययोजना, उत्सर्जन–तीव्रता में कमी तथा सतत जीवन–शैली के प्रचार जैसे क्षेत्रों में रचनात्मक पहल की है। इससे यह संकेत मिलता है कि भारत वैश्विक जलवायु राजनीति में केवल "जिम्मेदारियों के पुनर्वितरण" की बात नहीं करता, बल्कि "समाधान के निर्माण" में भी सक्रिय भागीदारी निभाता है। इस प्रकार विश्लेषण भारत को एक उत्तरदायी तथा रचनात्मक शक्ति के रूप में प्रस्तुत करता है।

डेटा विश्लेषण का एक अन्य महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि वैश्विक जलवायु राजनीति में शक्ति–संबंधों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। विकसित देशों के पास वित्तीय संसाधन, प्रौद्योगिकी, वैश्विक संस्थागत प्रभाव और वार्ताओं में वर्चस्व की क्षमता अधिक है, जबकि विकासशील देश अपने विकास–अधिकार, अनुकूलन

eISSN 3049-2610
Research Stream
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 03, Issue 01, March 2026

क्षमता और जलवायु न्याय के आधार पर अधिक न्यायपूर्ण व्यवस्था की मांग करते हैं। भारत इस शक्ति–संतुलन के बीच एक ऐसी स्थिति ग्रहण करता है, जहाँ वह एक ओर विकासशील देशों की आवाज़ बनता है और दूसरी ओर एक उभरती हुई वैश्विक शक्ति के रूप में स्वयं को जिम्मेदार भागीदार भी प्रदर्शित करता है। यही द्विस्तरीय स्थिति भारत की जलवायु राजनीति को विशेष बनाती है।

समग्रतः डेटा विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति केवल पर्यावरणीय संकट–प्रबंधन का विषय नहीं है, बल्कि यह विश्व राजनीति की नई संरचना, वैश्विक न्याय, विकास–अधिकार, और बहुपक्षीय शासन की प्रकृति को समझने का एक प्रमुख माध्यम है। भारत इस राजनीति में एक महत्वपूर्ण, सक्रिय, संतुलनकारी और संभावित नेतृत्वकारी शक्ति के रूप में उभरता दिखाई देता है, जिसकी नीतियाँ विकास, पर्यावरण और न्यायकृतीनों के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती हैं।

1.12 चर्चा (Discussion)– प्रस्तुत अध्ययन की चर्चा से यह स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आता है कि जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति समकालीन अंतरराष्ट्रीय संबंधों की सबसे जटिल और बहुआयामी प्रक्रियाओं में से एक है। यह केवल पर्यावरणीय संकट की प्रतिक्रिया नहीं है, बल्कि वैश्विक शक्ति–संरचना, आर्थिक असमानताओं, विकास–अधिकार, नैतिक उत्तरदायित्व, बहुपक्षीय शासन और अंतरराष्ट्रीय कूटनीति के बीच अंतर्संबंधों को समझने का भी एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है। जलवायु परिवर्तन ने राष्ट्र–राज्यों के बीच पारंपरिक सुरक्षा, शक्ति और सहयोग की अवधारणाओं को एक नए संदर्भ में प्रस्तुत किया है। अब पर्यावरणीय संकट अंतरराष्ट्रीय राजनीति के हाशिए का विषय नहीं, बल्कि उसके केंद्र में स्थित एक निर्णायक प्रश्न बन चुका है।

चर्चा से यह स्पष्ट होता है कि जलवायु परिवर्तन की राजनीति में विकसित और विकासशील देशों के बीच मूलभूत मतभेद अब भी विद्यमान हैं। विकसित देश उत्सर्जन में कटौती, कार्बन बाज़ार, नेट–ज़ीरो प्रतिबद्धताओं और वैश्विक पर्यावरणीय नियमों पर बल देते हैं, जबकि विकासशील देश ऐतिहासिक उत्तरदायित्व, जलवायु न्याय, जलवायु वित्त, तकनीकी हस्तांतरण, अनुकूलन सहायता और विकास के अधिकार को प्राथमिकता देते हैं। यह तनाव इस बात का संकेत है कि जलवायु राजनीति को वैज्ञानिक सहमति भर से संचालित नहीं किया जा सकता; यह गहराई से शक्ति, संसाधन और न्याय के प्रश्नों से प्रभावित होती है। इस प्रकार जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति वास्तव में उत्तर और दक्षिण के बीच असमान विकास–इतिहास तथा वर्तमान वैश्विक शक्ति–विन्यास का राजनीतिक प्रतिबिंब बन जाती है।

इस अध्ययन की चर्चा का एक केंद्रीय पक्ष भारत की भूमिका है। भारत की स्थिति विशिष्ट इसलिए है क्योंकि वह एक साथ अनेक भूमिकाएँ निभाता है वह जलवायु परिवर्तन से प्रभावित राष्ट्र भी है, विकासशील देशों का प्रतिनिधि भी है, एक उभरती हुई अर्थव्यवस्था भी है और वैश्विक शासन में प्रभाव बढ़ाने का इच्छुक राष्ट्र भी है। यही बहुस्तरीय स्थिति भारत की जलवायु नीति को जटिल बनाती है। भारत न तो विकसित देशों की तरह उत्सर्जन–प्रधान विकास के ऐतिहासिक बोझ से युक्त है, न ही वह एक ऐसा छोटा या निर्बल देश है जिसकी अंतरराष्ट्रीय वार्ताओं में सीमित भूमिका हो। इसके विपरीत, भारत अपनी जनसंख्या, अर्थव्यवस्था, ऊर्जा–आवश्यकताओं, लोकतांत्रिक संरचना और वैश्विक दक्षिण से जुड़ाव के कारण जलवायु राजनीति में एक निर्णायक आवाज़ के रूप में उपस्थित है।

eISSN 3049-2610
Research Stream
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 03, Issue 01, March 2026

चर्चा यह भी दर्शाती है कि भारत की जलवायु नीति मूलतः संतुलनवादी है। भारत की प्राथमिकता एक ओर आर्थिक विकास, गरीबी उन्मूलन, ऊर्जा–सुरक्षा, औद्योगिकीकरण और सामाजिक न्याय को सुनिश्चित करना है, वहीं दूसरी ओर वह पर्यावरणीय उत्तरदायित्वों और अंतरराष्ट्रीय दायित्वों से पूर्णतः विमुख नहीं है। भारत ने बार–बार यह स्पष्ट किया है कि जलवायु परिवर्तन से निपटने की रणनीति न्यायपूर्ण, समतामूलक और विकास–अनुकूल होनी चाहिए। इसी कारण भारत ने जलवायु न्याय और CBDR के सिद्धांतों को लगातार समर्थन दिया है। यह रुख दर्शाता है कि भारत की जलवायु राजनीति किसी नकारात्मक प्रतिरोध पर आधारित नहीं है, बल्कि एक न्याय–आधारित वैकल्पिक वैश्विक व्यवस्था की मांग पर आधारित है।

अध्ययन की चर्चा का एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि भारत ने केवल सिद्धांतात्मक स्तर पर ही नहीं, बल्कि व्यावहारिक स्तर पर भी जलवायु समाधान की दिशा में उल्लेखनीय पहल की है। नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में प्रगति, सौर ऊर्जा विस्तार, अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन की स्थापना, ऊर्जा–दक्षता कार्यक्रम, हरित विकास की अवधारणा, और राष्ट्रीय जलवायु कार्ययोजनाएँ यह संकेत करती हैं कि भारत अपने विकास मॉडल को क्रमशः अधिक सतत दिशा में रूपांतरित करने का प्रयास कर रहा है। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारत की भूमिका केवल "जलवायु न्याय की माँग करने वाले देश" की नहीं, बल्कि "समाधान प्रस्तुत करने वाले देश" की भी है। यह परिवर्तन भारत की वैश्विक छवि और कूटनीतिक विश्वसनीयता दोनों को सुदृढ़ करता है।

चर्चा से यह भी ज्ञात होता है कि जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति में भारत की भूमिका समय के साथ अधिक रचनात्मक, सक्रिय और रणनीतिक हुई है। प्रारंभिक चरणों में भारत का रुख मुख्यतः रक्षात्मक था, जिसमें विकास–अधिकार और ऐतिहासिक उत्तरदायित्व के प्रश्न प्रमुख थे। किंतु वर्तमान समय में भारत न केवल अपनी विकासात्मक चिंताओं को प्रस्तुत करता है, बल्कि वैश्विक जलवायु शासन में रचनात्मक योगदान देने का भी प्रयास करता है। पेरिस समझौते में भारत की भागीदारी, उत्सर्जन–तीव्रता में कमी के लक्ष्य, गैर–जीवाश्म ऊर्जा क्षमता के विस्तार, और सतत जीवन–शैली को बढ़ावा देने जैसे प्रयास इस बात का प्रमाण हैं कि भारत अब वैश्विक जलवायु राजनीति में "शर्तों पर सहयोग" के बजाय "न्यायपूर्ण सहयोग" की दिशा में बढ़ रहा है।

हालाँकि, चर्चा यह भी इंगित करती है कि भारत के सामने अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं। भारत की बड़ी जनसंख्या, ऊर्जा की बढ़ती माँग, कोयला–आधारित ऊर्जा संरचना, शहरीकरण, औद्योगिक विस्तार, कृषि–संकट और क्षेत्रीय असमानताएँ उसकी जलवायु नीति को जटिल बनाती हैं। इसके अतिरिक्त, जलवायु वित्त और प्रौद्योगिकी तक न्यायपूर्ण पहुँच का अभाव, वैश्विक वार्ताओं में विकसित देशों की अनिश्चित प्रतिबद्धताएँ, तथा घरेलू स्तर पर नीति–क्रियान्वयन की सीमाएँ भी भारत के समक्ष महत्त्वपूर्ण बाधाएँ हैं। अतः भारत की जलवायु राजनीति को समझते समय केवल उसके दावों या संकल्पों को नहीं, बल्कि उसकी संरचनात्मक चुनौतियों को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

अंततः चर्चा यह स्थापित करती है कि जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति में भारत एक संतुलनकारी, न्याय–समर्थक और संभावित नेतृत्वकारी शक्ति के रूप में उभर रहा है। भारत की नीति एक ऐसी वैश्विक व्यवस्था की पक्षधर है, जिसमें पर्यावरणीय उत्तरदायित्व, विकास–अधिकार और वैश्विक न्याय के बीच संतुलन हो। यह संतुलन ही भारत की जलवायु कूटनीति की सबसे बड़ी विशेषता है। इस प्रकार, भारत की भूमिका

eISSN 3049-2610
Research Stream
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 03, Issue 01, March 2026

को केवल राष्ट्रीय हितों की रक्षा के रूप में नहीं, बल्कि वैश्विक दक्षिण की आवाज़, पर्यावरणीय न्याय के समर्थक और सतत भविष्य के सहभागी के रूप में भी समझा जाना चाहिए।

1.13 परिणाम (Findings)– प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित प्रमुख परिणाम प्राप्त होते हैं–

जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति समकालीन अंतरराष्ट्रीय संबंधों का एक केंद्रीय प्रश्न बन चुकी है, जो पर्यावरण, अर्थव्यवस्था, विकास और शक्ति–संतुलन सभी को प्रभावित करती है।

जलवायु परिवर्तन का प्रश्न केवल वैज्ञानिक या पर्यावरणीय नहीं, बल्कि गहरे रूप से राजनीतिक और नैतिक है, क्योंकि इसमें उत्तरदायित्व, संसाधन और न्याय के प्रश्न जुड़े हुए हैं।

विकसित और विकासशील देशों के बीच जलवायु उत्तरदायित्व को लेकर मूलभूत असमानता विद्यमान है, जो वैश्विक जलवायु वार्ताओं में तनाव और विवाद का कारण बनती है।

"समान किंतु विभेदित उत्तरदायित्व" का सिद्धांत वैश्विक जलवायु राजनीति में न्यायपूर्ण व्यवस्था का आधार प्रस्तुत करता है, और भारत इस सिद्धांत का प्रबल समर्थक है।

भारत जलवायु परिवर्तन से गंभीर रूप से प्रभावित देशों में सम्मिलित है, विशेषकर कृषि, जल संसाधन, स्वास्थ्य, तटीय क्षेत्र और आपदा–संवेदनशील क्षेत्रों में इसके प्रत्यक्ष प्रभाव दिखाई देते हैं।

भारत की जलवायु नीति विकास और पर्यावरणीय उत्तरदायित्वों के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती है, जिससे यह नीति व्यावहारिक और संतुलनवादी स्वरूप ग्रहण करती है।

भारत ने अंतरराष्ट्रीय जलवायु वार्ताओं में जलवायु न्याय, जलवायु वित्त, तकनीकी हस्तांतरण और विकास–अधिकार के प्रश्नों को प्रभावी ढंग से उठाया है, जिससे उसकी कूटनीतिक भूमिका सशक्त हुई है।

भारत केवल एक प्रभावित देश नहीं, बल्कि वैश्विक जलवायु राजनीति में एक सक्रिय, रचनात्मक और उत्तरदायी भागीदार के रूप में उभर रहा है।

नवीकरणीय ऊर्जा, अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन, ऊर्जा–दक्षता और हरित विकास की पहलों के माध्यम से भारत ने समाधानोन्मुख नेतृत्व का परिचय दिया है।

भारत की जलवायु कूटनीति वैश्विक दक्षिण के हितों और पर्यावरणीय न्याय के पक्ष में एक संतुलित एवं वैचारिक आधार प्रस्तुत करती है।

पेरिस समझौते और उसके बाद की जलवायु राजनीति में भारत की भूमिका अधिक रचनात्मक और रणनीतिक हुई है, जो उसकी बढ़ती वैश्विक प्रतिष्ठा का संकेत देती है।

जलवायु वित्त, हरित प्रौद्योगिकी की उपलब्धता, ऊर्जा संक्रमण और घरेलू क्रियान्वयन जैसी चुनौतियाँ अभी भी भारत की जलवायु नीति के सामने प्रमुख बाधाएँ हैं।

समग्रतः भारत जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति में एक संभावित नेतृत्वकारी शक्ति के रूप में उभर रहा है, जो विकास, पर्यावरण और न्यायकृतीनों के बीच संतुलित दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

निष्कर्ष– "जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति और भारत" विषय के अध्ययन से यह स्पष्ट रूप से स्थापित होता है कि जलवायु परिवर्तन समकालीन विश्व व्यवस्था का केवल पर्यावरणीय संकट नहीं, बल्कि एक गहन राजनीतिक, आर्थिक, नैतिक और कूटनीतिक प्रश्न है। यह समस्या वैश्विक शक्ति–संबंधों, विकास

eISSN 3049-2610
Research Stream
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 03, Issue 01, March 2026

की असमानताओं, संसाधनों के वितरण, ऐतिहासिक उत्तरदायित्व और भविष्य की नीति–दिशाओं से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी हुई है। इसलिए जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति को समझना वस्तुतः वर्तमान अंतरराष्ट्रीय संबंधों की बदलती प्रकृति को समझना है।

अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि जलवायु परिवर्तन ने अंतरराष्ट्रीय राजनीति में विकसित और विकासशील देशों के बीच एक नए प्रकार के विमर्श और संघर्ष को जन्म दिया है। विकसित देशों ने ऐतिहासिक रूप से औद्योगिकीकरण और अत्यधिक कार्बन उत्सर्जन के माध्यम से वर्तमान जलवायु संकट को गहरा किया, जबकि विकासशील देश अपेक्षाकृत कम उत्सर्जन के बावजूद इसके सबसे गंभीर प्रभावों का सामना कर रहे हैं। यह असमानता जलवायु न्याय, जलवायु वित्त, तकनीकी हस्तांतरण और "समान किंतु विभेदित उत्तरदायित्व" जैसे सिद्धांतों को वैश्विक जलवायु राजनीति के केंद्र में ले आती है। इस दृष्टि से जलवायु परिवर्तन की राजनीति वास्तव में वैश्विक न्याय और विकास–अधिकार की राजनीति भी है।

भारत की भूमिका इस समूचे विमर्श में अत्यंत विशिष्ट और महत्त्वपूर्ण है। भारत एक ओर जलवायु परिवर्तन से प्रभावित राष्ट्र है, जहाँ अनियमित मानसून, सूखा, बाढ़, चक्रवात, जल–संकट, कृषि–अस्थिरता और पर्यावरणीय अवनति जैसी समस्याएँ तेजी से उभर रही हैं; वहीं दूसरी ओर भारत एक विकासशील, उभरती हुई अर्थव्यवस्था भी है, जिसे अपनी विशाल जनसंख्या के लिए ऊर्जा, अवसंरचना, औद्योगिक विकास, आजीविका और सामाजिक न्याय सुनिश्चित करना है। इस प्रकार भारत के समक्ष विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन स्थापित करने की जटिल चुनौती उपस्थित है।

अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि भारत की जलवायु नीति केवल रक्षात्मक या प्रतिरोधात्मक नहीं है। भारत ने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर जलवायु न्याय, CBDR, जलवायु वित्त, तकनीकी हस्तांतरण और विकास–अधिकार जैसे मुद्दों को दृढ़ता से उठाया है, किंतु इसके साथ ही उसने समाधानोन्मुख और रचनात्मक भूमिका भी निभाई है। नवीकरणीय ऊर्जा विस्तार, अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन, ऊर्जा–दक्षता कार्यक्रम, हरित विकास, सतत जीवन–शैली और पेरिस समझौते के प्रति प्रतिबद्धता जैसी पहलों से यह स्पष्ट होता है कि भारत वैश्विक जलवायु राजनीति में केवल अपनी सीमाओं और चुनौतियों की चर्चा नहीं करता, बल्कि वह एक वैकल्पिक और व्यावहारिक मार्ग भी प्रस्तुत करता है।

इस शोध का एक महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि भारत की जलवायु कूटनीति न्याय, विकास और उत्तरदायित्वकृ इन तीनों के बीच संतुलन का प्रयास करती है। भारत ने बार–बार यह रेखांकित किया है कि जलवायु परिवर्तन से निपटने की वैश्विक रणनीति तभी प्रभावी हो सकती है, जब उसमें ऐतिहासिक उत्सर्जन, आर्थिक क्षमता, विकास की आवश्यकता और सामाजिक न्याय के प्रश्नों को समान महत्त्व दिया जाए। इसलिए भारत की भूमिका को केवल राष्ट्रीय हितों की रक्षा के संदर्भ में नहीं, बल्कि वैश्विक दक्षिण की आवाज़, पर्यावरणीय न्याय के समर्थक और सतत विकास के भागीदार के रूप में भी देखा जाना चाहिए।

अध्ययन यह भी दर्शाता है कि भारत की भूमिका समय के साथ अधिक सक्रिय, संतुलनकारी और नेतृत्वकारी होती गई है। प्रारंभिक जलवायु वार्ताओं में जहाँ भारत का दृष्टिकोण अपेक्षाकृत रक्षात्मक था, वहीं वर्तमान समय में वह जलवायु समाधान, हरित प्रौद्योगिकी, सौर ऊर्जा, बहुपक्षीय सहयोग और सतत विकास के क्षेत्रों में रचनात्मक योगदान देने वाला देश बनकर उभरा है। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारत जलवायु परिवर्तन

eISSN 3049-2610
Research Stream
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 03, Issue 01, March 2026

की वैश्विक राजनीति में केवल एक सहभागी राष्ट्र नहीं, बल्कि एक प्रभावशाली और उत्तरदायी शक्ति के रूप में अपनी पहचान निर्मित कर रहा है।

फिर भी, इस क्षेत्र में भारत के सामने अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं। ऊर्जा की बढ़ती मांग, जीवाश्म ईंधनों पर आंशिक निर्भरता, जलवायु वित्त की सीमाएँ, हरित तकनीक तक समुचित पहुँच का अभाव, घरेलू नीति–क्रियान्वयन की कठिनाइयाँ, और सामाजिक–आर्थिक असमानताएँ भारत की जलवायु नीति को जटिल बनाती हैं। अतः भारत की भावी सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि वह किस प्रकार राष्ट्रीय विकास की प्राथमिकताओं और वैश्विक पर्यावरणीय प्रतिबद्धताओं के बीच दीर्घकालिक और न्यायपूर्ण संतुलन स्थापित कर पाता है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि जलवायु परिवर्तन की वैश्विक राजनीति में भारत एक संतुलनकारी, उत्तरदायी और संभावित नेतृत्वकारी शक्ति के रूप में उभर रहा है। भारत की नीति इस विचार पर आधारित है कि पर्यावरणीय उत्तरदायित्व और विकास–अधिकार परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि समन्वित रूप से संचालित किए जा सकते हैं। यदि वैश्विक जलवायु शासन में न्याय, समता, वित्तीय सहयोग, तकनीकी हस्तांतरण और बहुपक्षीय प्रतिबद्धताओं को सुदृढ़ किया जाए, तो भारत न केवल अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा कर सकेगा, बल्कि वैश्विक जलवायु समाधान में भी एक महत्त्वपूर्ण और प्रेरक भूमिका निभा सकेगा। यही इस अध्ययन का केंद्रीय निष्कर्ष है।

अनुशंसाएँ–

1 वैश्विक जलवायु शासन को अधिक न्यायपूर्ण बनाया जाए, ताकि विकसित और विकासशील देशों के बीच उत्तरदायित्व का संतुलित एवं व्यावहारिक निर्धारण हो सके।

2 विकसित देशों को अपने ऐतिहासिक दायित्वों को स्वीकार करते हुए जलवायु वित्त में वृद्धि करनी चाहिए, जिससे विकासशील देशों को अनुकूलन और शमन कार्यक्रमों के लिए पर्याप्त सहायता मिल सके।

3 हरित प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण को सरल, सुलभ और किफायती बनाया जाए, ताकि भारत जैसे विकासशील देश ऊर्जा संक्रमण की प्रक्रिया को तेज़ कर सकें।

4 भारत को नवीकरणीय ऊर्जा, विशेषकर सौर और पवन ऊर्जा के विस्तार को और अधिक प्राथमिकता देनी चाहिए, जिससे जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता कम हो।

5 जलवायु परिवर्तन को राष्ट्रीय विकास–नीति के साथ समेकित किया जाए, ताकि कृषि, जल, स्वास्थ्य, शहरीकरण, ऊर्जा और आपदा–प्रबंधन की योजनाएँ जलवायु–संवेदनशील दृष्टिकोण से तैयार की जा सकें।

6 भारत को जलवायु न्याय और CBDR के सिद्धांतों की वकालत अंतरराष्ट्रीय मंचों पर निरंतर और प्रभावी रूप से करते रहना चाहिए, जिससे वैश्विक दक्षिण के हितों की बेहतर रक्षा हो सके।

7 ग्रामीण और कृषि क्षेत्रों में जलवायु–अनुकूल तकनीकों तथा टिकाऊ कृषि पद्धतियों को बढ़ावा दिया जाए, ताकि किसानों और ग्रामीण समुदायों की संवेदनशीलता कम की जा सके।

8 जलवायु शिक्षा और जन–जागरूकता कार्यक्रमों को विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय स्तर पर सुदृढ़ किया जाए, जिससे समाज में पर्यावरणीय उत्तरदायित्व की चेतना विकसित हो।

9 राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर जलवायु नीति के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए संस्थागत समन्वय बढ़ाया जाए, ताकि विभिन्न विभागों और योजनाओं में तालमेल स्थापित हो सके।

10 जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से सर्वाधिक प्रभावित समूहों जैसे किसान, महिलाएँ, आदिवासी समुदाय, तटीय आबादी और गरीब वर्ग के लिए विशेष अनुकूलन नीतियाँ विकसित की जाएँ।

11 भारत को अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन और अन्य बहुपक्षीय पहलों के माध्यम से वैश्विक नेतृत्व की अपनी भूमिका को और सुदृढ़ करना चाहिए, ताकि वह समाधानोन्मुख शक्ति के रूप में स्थापित हो सके।

12 शोध, नवाचार और हरित प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में निवेश बढ़ाया जाए, जिससे देश के भीतर जलवायु–अनुकूल विकास का वैज्ञानिक आधार मजबूत हो।

13 जलवायु परिवर्तन की नीति–निर्माण प्रक्रिया में स्थानीय समुदायों, नागरिक समाज, अकादमिक संस्थानों और नीति–विशेषज्ञों की सहभागिता सुनिश्चित की जाए, ताकि नीतियाँ अधिक समावेशी, व्यावहारिक और प्रभावी बन सकें।

संदर्भ सूची–

1. **Lieven, Anatol.** *Climate Change and the Nation State: The Case for Nationalism in a Warming World*. Oxford University Press, 2020, ISBN: 9780190090180.
2. **Mehta, Rajan.** *Backstage Climate: The Science and Politics Behind Climate Change*. Westland Non-Fiction, 2024, ISBN: 9789360451714.
3. **Spears, Dean.** *Air: Pollution, Climate Change and India's Choice Between Policy and Pretence*. HarperCollins India, 2019, ISBN: 9789353570835.
4. **Islam, Md Nazrul, and André van Amstel (eds.).** *India III: Climate Change and Landscape Issues in India: A Cross-Disciplinary Framework*. Springer Nature, 2025, ISBN: 9783031851261.
5. **Solanki, Chetan Singh.** *Climate Change 2100: Survive or Thrive?: Global Warming, Sustainability & the Future of Humanity*. Penguin Random House India, 2025, ISBN: 9789373036410.
6. **Bhargava, Gopal.** *Ecological Politics: Different Dimensions*. Gyan Publishing House, 2002, ISBN: 9788178350196.
7. **Ghosh, Amitav.** *The Great Derangement: Climate Change and the Unthinkable*. University of Chicago Press, 2016, ISBN: 9780226323039.
8. **Dubash, Navroz K. (ed.).** *India in a Warming World: Integrating Climate Change and Development*. Oxford University Press, 2019, ISBN: 9780199498734.
9. **Dubash, Navroz K.** *The Politics of Climate Change in India: Narratives of Equity and Co-Benefits*. Routledge / Earthscan, 2012, ISBN: 9780415895354.
10. **Falkner, Robert.** *Environmentalism and Global International Society*. Cambridge University Press, 2012, ISBN: 9781107605466.

11. **Newell, Peter.** *Globalization and the Environment: Capitalism, Ecology and Power*. Polity Press, 2012, ISBN: 9780745647340.
12. **Paterson, Matthew.** *Global Warming and Global Politics*. Routledge, 1996, ISBN: 9780415147989.
13. **Bulkeley, Harriet, and Peter Newell.** *Governing Climate Change*. Routledge, 2010, ISBN: 9780415451949.
14. **Falkner, Robert (ed.).** *The Handbook of Global Climate and Environment Policy*. Wiley-Blackwell, 2013, ISBN: 9781118326220.
15. **Bodansky, Daniel.** *The Art and Craft of International Environmental Law*. Harvard University Press, 2010, ISBN: 9780674035430.
16. **Rajamani, Lavanya.** *Differential Treatment in International Environmental Law*. Oxford University Press, 2006, ISBN: 9780199271801.
17. **Agarwal, Anil, and Sunita Narain.** *Global Warming in an Unequal World: A Case of Environmental Colonialism*. Centre for Science and Environment, 1991, ISBN: उपलब्ध नहीं.
18. **Saran, Shyam.** *How India Sees the World: Kautilya to the 21st Century*. Juggernaut, 2017, ISBN: 9789386228093.
19. **Ayres, Alyssa.** *Our Time Has Come: How India Is Making Its Place in the World*. Oxford University Press, 2018, ISBN: 9780190494520.
20. **Pachauri, R. K., and Leo Meyer (eds.).** *Climate Change 2014: Synthesis Report*. IPCC, 2015, ISBN: 9789291691432.
21. **IPCC.** *Climate Change 2023: Synthesis Report*. Intergovernmental Panel on Climate Change, 2023, ISBN: उपलब्ध संस्करणानुसार.
22. **Stern, Nicholas.** *The Economics of Climate Change: The Stern Review*. Cambridge University Press, 2007, ISBN: 9780521700801.
23. **Shue, Henry.** *Climate Justice: Vulnerability and Protection*. Oxford University Press, 2014, ISBN: 9780198713708.
24. **Dubash, Navroz K.** "Toward a Progressive Indian and Global Climate Politics." *Climate Policy*, 2012, DOI: 10.1080/14693062.2012.692592.
25. **Rajamani, Lavanya.** "The Changing Fortunes of Differential Treatment in the Evolution of International Environmental Law." *International Affairs*, 2012, DOI: 10.1111/j.1468-2346.2012.01082.x.
26. **Rajamani, Lavanya, and J. Depledge.** "The Paris Agreement." *International and Comparative Law Quarterly*, 2017, DOI: 10.1017/S0020589317000068.
27. **Bodansky, Daniel.** "The Paris Climate Change Agreement: A New Hope?" *American Journal of International Law*, 2016, DOI: 10.1017/S2398772300000337.
28. **Falkner, Robert.** "The Paris Agreement and the New Logic of International Climate Politics." *International Affairs*, 2016, DOI: 10.1111/1468-2346.12708.
29. **Pickering, Jonathan, Frank Jotzo, and Peter J. Wood.** "Splitting the Difference: Differentiation and Equity in the Paris Agreement." *Global Environmental Politics*, 2015, DOI: 10.1162/GLEP_a_00316.
30. **Hurrell, Andrew, and Sandeep Sengupta.** "Emerging Powers, North–South Relations and Global Climate Politics." *International Affairs*, 2012, DOI: 10.1111/j.1468-2346.2012.01084.x.
31. **Dubash, Navroz K., and Lavanya Rajamani.** "India and Climate Change: Domestic Politics and International Negotiations." *Global Environmental Politics*, 2010, DOI: 10.1162/GLEP_a_00015.
32. **Michaelowa, Axel, and Lavanya Rajamani.** "India and the Climate Regime: Climate Justice as a Negotiating Strategy." *International Environmental Agreements*, 2012, DOI: 10.1007/s10784-012-9181-4.

33. **Hallegatte, Stéphane, et al.** "Shock Waves: Managing the Impacts of Climate Change on Poverty." *World Bank Policy Research*, 2016, DOI/Report format: विश्व बैंक प्रकाशन.

34. **Pai, Sudha, and others.** "Climate Change and Indian Agriculture: Impacts, Adaptation and Policy." *Indian Journal of Agricultural Economics*, ISSN अनुसार.

35. **Mohan, Geeta, and C. Raja Mohan.** "Climate Diplomacy and India's Global Role." *India Quarterly*, 2014, DOI: 10.1177/0974928414541484.

36. **Atteridge, Aaron, and others.** "Climate Policy in India: What Shapes International, National and State Policy?" *Ambio*, 2012, DOI: 10.1007/s13280-012-0282-5.

37. **Jayaraman, T.** "Climate Change and India's Policy Choices." *Social Scientist*, 2007, ISSN: 0970-0293.

38. **Shue, Henry.** "Historical Responsibility, Harm Prohibition, and Preservation Requirement: Core Practical Convergence on Climate Change." *Moral Philosophy and Politics*, 2015, DOI: 10.1515/mopp-2013-0036.

39. **Agarwal, Anil, and Sunita Narain.** "Global Warming: The North-South Divide." *Down To Earth / CSE Discussion Papers*, 1991, ISSN/Report format.

40. **Vihma, Antto.** "India and the Global Climate Governance Architecture." *Review of International Studies*, 2015, DOI: 10.1017/S0260210514000413.

41. **Mace, M. J.** "Mitigation Commitments Under the Paris Agreement and the Way Forward." *Climate Law*, 2016, DOI: 10.1163/18786561-00601006.

42. **Victor, David G.** "The Politics of Fossil-Fuel Subsidies." *Global Subsidies Initiative / IISD Papers*, रिपोर्ट स्वरूप.

43. **Oberthür, Sebastian, and Claire Dupont.** "The European Union's International Climate Leadership: Towards a Grand Climate Strategy?" *Journal of European Public Policy*, 2021, DOI: 10.1080/13501763.2021.1918218.